मध्यकालीन बिहार में जैनियों की सामाजिक-धार्मिक दुनिया

डॉ. शुभ्रा सिन्हा

मधयकाल के क्षेत्रीय इतिहास के संदर्भ में, बिहार[1] का एक विशेष सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक महत्त्व है। अकबर (1556-1605) के शानकाल के दौरान प्रशासनिक पुनर्गठन के कारण 1580 में बिहार सूबे का निर्माण हुआ। यह बारह सूबों[2] (प्रांतों) में से एक था और 17वीं शताब्दी तक अपनी स्वतंत्र स्थिति बनाये रखने में कामयाब रहा। वास्तव में, राजनीतिक स्थिरता के साथ-साथ क्षेत्रीय विस्तार, शहरों का विकास, व्यापार की वृद्धि, नए व्यापार मार्गों का खुलना आदि के कारण न केवल अर्थव्यवस्था में विविधता आई, बल्कि साथ ही इसने इस क्षेत्र के सामाजिक ताने-बाने को भी बदल दिया, जिसमें भारत और भारत के बाहर से विविध सामाजिक समूहों का आगमन हुआ। इनमें से एक प्रमुख समूह जैनियों का था। राजस्थान के बाहर के इस प्रवासी व्यापारिक समुदाय को बोलचाल की भाषा में मारवाड़ी[3] कहा जाता था। पूर्व की स्थानीय बोलचाल में उन्हें कैन्या या काया भी कहा जाता था, जो साहूकार के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द था। सामान्य तौर पर मारवाड़ियों और विशेष रूप से पूर्वी क्षेत्र में जैनियों के प्रवास का पता 16वीं शताब्दी की शुरुआत में लगाया जा सकता है। प्रारंभ में, वे एक स्वतंत्र व्यापारी के रूप में नहीं आए, बल्कि अभियानों के दौरान विशेष रूप से मोदी और पोतेदार (पोद्दार)[4] के रूप में भोजन की आपूर्ति करने हेतु मुगल सेना के साथ आए थे। उनमें से एक आमेर के जैन परामर्शदाता, महामात्य नानू थे, जो न केवल अकबर के प्रधाान सेनापति राजा मानसिंह के साथ बंगाल, बिहार और उड़ीसा के पूर्वी प्रांत के अभियानों में सम्मिलित हुए, बल्कि राजमहल में राजा मानसिंह के शासन के तहत, उन्होंने क्षेत्र की प्रशासनिक और आर्थिक गतिविधियों में भी भाग लिया।[5] कालांतर में इस समुदाय का प्रसार पटना, हाजीपुर, आरा, बिहारशरीफ, भागलपुर, तिरहुत (दरभंगा और मुजफ्फरपुर), गया और रांची (छोटानागपुर) में हुआ।

इस शोधा-पत्र में जैनियों की सामाजिक-धार्मिक दुनिया का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है और साथ ही साथ किस तरह से इस समुदाय ने समकालीन समाज के साथ एकीकरण करते हुए अपनी विशिष्ट पहचान को बनाए रखा, इसका भी अधययन किया गया है।

जैन समुदाय का प्रांत के साथ पुराना संबंध था, क्योंकि तीर्थंकरों से जुड़े कुछ सबसे महत्वपूर्ण तीर्थस्थल जैसे राजगृह, वैशाली, पावापुरी, सम्मत शिखर पारसनाथ, चंपापुरी (भागलपुर के पास), मंदार (बांका के पास), कुंडलपुर (नालंदा के पास), गुनाया (नवादा के पास), मसार (आरा), श्रीकमलदह (गुलजारबाग), मिथिला, इत्यादि इसी क्षेत्र में थे।[6] मध्यकाल में जैन तीर्थों की संख्या में वृ) हुई। इनमें से कुछ तीर्थ कल्याणक क्षेत्र थे जबकि अन्य निर्वाण क्षेत्र, सिद्ध क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र थे।[7] जैन इस क्षेत्र में न केवल तीर्थयात्रियों के रूप में बल्कि प्रशासकों और व्यापारियों के रूप में भी आये। एक प्रवासी समुदाय होने के नाते, वे हमेशा अपनी परंपरा, रीति-रिवाजों का पालन करने के लिए उत्सुक रहते थे जो उन्हें मूल स्थान पर अपने समुदाय से जोड़ते थे, लेकिन

सह-प्राध्यापक इतिहास विभाग कमला नेहरु कॉलेज (दिल्ली विश्वविद्यालय) Mob-9868674944, shubhra_sinha123@yahoo.com